रात्रि क्लास 4/10/68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

देहली को घेराव करना है। वास्तव में यह जो त्रिमूर्ति और झाड़ का चित्र है यह है मुख्य फॉरेनर्स के लिए। इस पर उन्हों को समझाना अच्छा है। जब कोई फारेनर आते हैं उनको संगमयुग की नालेज भी जरूर देनी पड़े। यह तो नई दुनिया और पुरानी दुनिया का संगम है। यह है मुख्य बात। एक तरफ हेविन है, एक तरफ है हेल। हेल को हेविन तो गॉड फादर ही बनावेंगे। यह पुरानी दुनिया है, वह नई दुनिया है। नई दुनिया फादर ही स्थापन करेंगे। फादर को जरूर बॉडी(शरीर) चाहिए। वह बॉडी भी ऊपर में खड़ी है। समझाना होता है फादर एडम द्वारा यह विष्णुपुरी स्थापन करते हैं। इन द्वारा यह हेविन का मालिक बना है। विष्णु का दो रूप है। ल0ना0। स्थापना करने वाले ऊपर में खड़े हैं। यह है आदम। पहला आदम कहेंगे ना। कृष्ण को एडम नहीं समझते हैं। तो इस तरह समझाना चाहिए यह है एडम। यह पैराडाइज का मालिक है। जो फिर 84 जन्म पिछाड़ी में यह एडम बनते हैं। बाप इन एडम का रथ लेते हैं। बच्चे समझाते तो होंगे। पहले2 है यह ल0ना0। फिर है राम। फिर और और धर्म हैं। अभी संगम तो है। गॉड फादर सभी को लिबरेट कर ले जावेंगे गाइड बनकर। यह हेविन की स्थापना करते हैं। यह समझा सकते हो आबू में ही हेविन की यादगार है। एडम कैसे अपने बच्चों के सहित हैं, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं ना। प्राचीन भारत का योग सीख रहे हैं हेविन स्थापन करने लिए। तो उनको समझाना पड़े। बाप एडम तन में आते हैं। सारे विश्व की सद्गति करते हैं। हेविन में हेल तो हो न सके। उनका विनाश सामने खड़ा है। ऐसे ऐसे समझाना होता है। बाप बैठ सर्व की सद्गति करते हैं। बाप सभी को लिबरेट करते हैं। अभी सभी आयरन एज में है फिर बाप लिबरेट कर स्वीटहोम ले जाते हैं। अभी यह समझानी तो सभी के लिए है। बड़ी ही सहज रीति से समझाई जा सकती है; परन्तु बुद्धि में क्यों नहीं बैठता है; क्योंकि अभी तो टाइम है नहीं। इस समय तक जो सर्विस चल रही है एक्युरेट। बच्चों को खड़ा करने लिए कहते हैं। बाकी बाप तो समझते हैं जो कुछ चलता आता है बिल्कुल ठीक है। आगे के लिए अच्छी रीति पुरुषार्थ करो। सर्विस तो बहुत बच्चे करते ही रहते हैं। बच्चे समझ गये हैं हमको सर्विस को बढ़ाना है। बाबा खुद कहते हैं घेराव डालो तो टूयेरेस्ट से आवाज़ निकले। एक भी आवाज़ करे तो एक के पिछाड़ी बहुत आने लग पड़ेंगे। उनकी आवाज़ से बहुत ही आवाज़ हो जावेगा; क्योंकि सन्यासी लोग बहुतों को जाकर ठगते हैं। इसमें क्रप्शन, एडल्ट्रेशन इतनी है जो भारत का खाना ही खराब कर दिया है। भारत की आबादी और बरबादी। उत्थान और पतन। तुम लिखते हो; परन्तु समझते थोड़े ही हैं। हूबहू जैसे बन्दर। देहली साउथ के म्युजियम में एम0पी0 आदि बहुत आते हैं। अभी 175 आये हैं। प्रभाव पड़ता है यह ब्रह्माकुमारियाँ अच्छा काम करती हैं। यह नहीं समझते हैं कि असल प्युरिटी थी जो अब नहीं है। बाप समझाते हैं स्थापना तो होनी ही है। बच्चे समझते हैं कैनाट प्लेस में बड़े2 बहुत आते हैं और आवेंगे तो आवाज़ होगा। इस समय तक जो होता आया है कल्प पहले भी हुआ है। जो पास्ट हो गया बिल्कुल एक्युरेट। हार जीत तो होती ही है। देखा जाता है दोनों बराबर है। कितने माया से हार खाते हैं। पुरुषार्थ भी जो होता है कल्प पहले मिसल। बच्चे की आईडिया बहुत अच्छी है। यह हो जावेगी बड़ों की सर्विस। फिर गरीबों की सर्विस पीछे। थोड़ा ठहराया जाता है। रमेश जाकर पास करके आवे तो बाबा का कोई मना नहीं है। सर्विस करने वाले भी अच्छे चाहिए। मैदान में आना होगा। कहते हैं ना ब्रह्माकुमारियाँ मैदान में आवें। कैनाटप्लेस कोई कम थोड़े ही है। शिवबाबा के बच्चों का भण्डारा तो है ही।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।